सीमाओं से परे

जयपुर साहित्य उत्सव

स्टीवन पी. क्रशहॉफ़

पिको अय्यर ऐसे लेखक की अवधारणा को प्रतिबिंबित करते हैं जो सीमाओं के बंधन से परे हो– वह इंग्लैंड में भारतीय माता–पिता के यहां जन्मे, अमेरिका और ब्रिटेन में पले–बढ़े और अब जापान में रह रहे हैं। अय्यर के लिए पूरी दुनिया ही घर है या फिर पूरी दुनिया ही अनजानी। उनके लेखन में विभिन्न संस्कृतियों के बीच मौजूद अंतराल और उन लोगों की ज़िंदगी की पड़ताल होती है जो इस अंतराल में

जयपुर साहित्य उत्सव के दौरान गोवा में जन्मी लेखक और पत्रकार सोनिया फ़लेरियो उपन्यासकार विक्रम सेठ के साथ पुस्तकों के बारे में बातचीत करते हुए।

टीमवर्क आर्काइव

लेखक

रहते हैं। अय्यर *ग्लोबल सोल: जेट लेग, शॉपिंग माल्स एंड द सर्च फॉर होम,*में लिखते हैं, ''मैं एकसाथ तीन संस्कृतियों के बीच पला-बढ़ा, जिनमें से कोई भी पूरी तरह मेरी अपनी नहीं है, बहुत पहले से ही मैं समय के साथ ही स्थान के लिहाज से भी मुक्त अवस्था में हूं। मेरे पास कोई इतिहास नहीं था, मैं इसे महसूस कर सकता था और इस बोझ तले जिया कि मेरा कोई घर नहीं है।'' राजस्थान की राजधानी जयपुर के डिग्गी पैलेस में जयपुर साहित्य उत्सव के दौरान चर्चा के लिए जुटे लेखकों, संपादकों, पाठकों, प्रकाशकों और कलाकारों में अय्यर भी शामिल थे। उनकी इस यात्रा को आंशिक तौर पर नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास ने प्रायोजित किया था। इस साहित्य उत्सव में खांटी साहित्य के साथ ही पत्रकारिता, यात्रा लेखन, इतिहास, जीवनियां, और बाल साहित्य

टीमकर्क आर्काइव

लेखक पिको अय्यर जयपुर साहित्य उत्सव के दौरान लोगों से संवाद करते हुए।

को भी स्थान मिला। इस उत्सव के दौरान ऐसे लेखन की बात बार-बार उठी जो सीमाओं के बंधनों से परे हो। भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया, मलयेशिया, चीन और बांग्लादेश के लेखक इसको लेकर खासतौर पर प्रेरित थे।

अय्यर मजाक करते हुए कहते हैं कि उन्होंने साहित्य के विद्यार्थी के रूप में मार्केटिंग के गुर नहीं सीखे, सिर्फ पढ़ना और लिखना सीखा। ''मैंने साहित्य का जितना अध्ययन किया, मैं उतना ही बेरोज़गार होने के योग्य होता गया।'' अपने को साधारण मानने के बावजूद उन्होंने *टाइम* पत्रिका का निबंधकार होने का अवसर पाया। अय्यर ने बाद में अवकाश लेकर *वीडियो नाइट इन काठमांडू: एंड अदर रिपोर्ट्स फ्राम द नॉट सो फार ईस्ट* लिखी जो यात्रा लेखन के विस्फोट के दौर में 1989 में प्रकाशित हुई। पूर्व और पश्चिम के मिलन के मौके पर होने वाले संस्कृतियों के टकराव में अय्यर ने खुद अपनी बहुसांस्कृतिक विरासत का बिंब देखा। ''कुछ हद तक यह मेरी पृष्ठभूमि बोल रही थी।''

इस वैश्विक आत्मा के विपरीत अमेरिकी संस्मरण लेखक पैट्रिक मैक्डॉनल्ड एक खास समय और स्थान के संस्मरण पर केंद्रित होते हैं। वह भी मानव के सार्वभौमिक अस्तित्व के बारे में ही कुछ संदेश देते हैं। *आल सोल्स: ए फ़ैमिली स्टोरी फ्रॉम साउथी* में मैक्डॉनल्ड दक्षिणी बोस्टन के साउथी नामक उपेक्षित इलाके में अपने बड़े होने के दौरान हुए अनुभवों का वर्णन करते हैं। मैक्डॉनल्ड इस इलाके की गरीबी, हिंसा और अपराधों का खुलासा करते हैं जिनके बारे में खुले तौर पर कोई नहीं मानेगा और न ही उन पर चर्चा करेगा। यह

ज़्यादा जानकारी के लिए:

जयपुर साहित्य उत्सव

http://jaipurliteraturefestival.org/

अजीत कुमार

एकल नाम का इस्तेमाल करने वाले कवि रॉबिन्सन, लेखक और फ़िल्म निर्देशक सागरी छाबड़ा और अमेरिकी लेखक माइकल मैक्डॉनल्ड साहित्य उत्सव के बाद नई दिल्ली में अमेरिकी डिप्टी चीफ़ ऑफ़ मिशन स्टीवन जे. व्हाइट की मेज़बानी में हुए समारोह में।

इलाका 1974 में कुख्यात हो गया जब स्कूलों को अलग-थलग करने के फैसले को रद्द करने के मसले पर दंगे भड़क उठे।

उत्सव के दौरान अपने संबोधन में मैक्डॉनल्ड ने इस इलाके से अपने बाहर जाने के अनुभवों को याद किया। ''एक छोटी, सीमित दुनिया से बाहर जाना जिसके बारे में आपने सोचा था कि सिर्फ दुनिया वही है।'' उन्होंने बाद में अश्वेत ओर लैटिनो बस्तियों में सामुदायिक संगठन कार्यकर्ता के रूप में अपने अनुभवों का भी जिक्र किया। वह कहते हैं कि लोगों को तो यह भी नहीं पता कि श्वेत गरीबी जैसी कोई चीज होती भी है। संस्मरण लिखने का उनका फैसला सामुदायिक संगठन कार्यकर्ता के बतौर उनके अनुभवों के आधार पर आया। वहां उन्होंने मांओं को अन्य लोगों तक पहुंचने के क्रम में अपनी कथाएं सुनाते देखा। उन्होंने देखा कि अपनी आपबीती सुनाने का खुद अपने पर और सुनने वालों पर किस तरह का असर होता है।

मैक्डॉनल्ड का अनुभव है कि अपने मूल स्थान से प्यार-घृणा का संबंध सार्वभौमिक अनुभव है और उस जगह पर वापसी आपको राहत देने की प्रक्रिया बन सकती है।

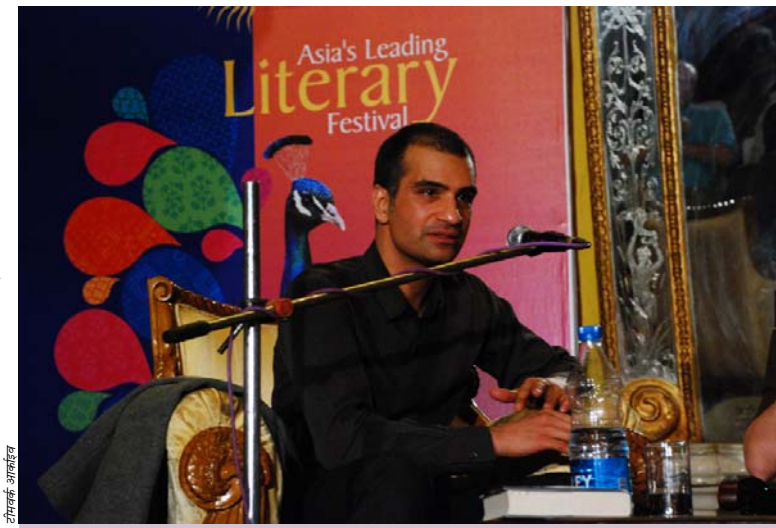

टीमकर्क आर्काइव

लेखक नदीम असलम उत्सव के दौरान एक सत्र में बोलते हुए।

वह जुड़ाव और समुदाय की स्मृति और बड़े सामाजिक तानेबाने का हिस्सा होने का अहसास करते हुए कहते हैं, ''मेरे लिए यह अब भी दुनिया की सबसे अच्छी बस्ती है।''

उत्सव के बाद स्पैन की दीपांजली काकाती के साथ एक इंटरव्यू में मैक्डॉनल्ड ने लेखन के बारे में कुछ यूं कहा, ''... ऐसी चीज़ों के बारे में भाषा तलाशना जिन्हें बोलना मुमकिन नहीं है। लेखक अस्तवयस्तता के बीच एक कहानी बुनकर एक तरह से लोगों के लिए चीज़ों को आसान बना देते हैं। और यदि हम खुद वहां पहुंच जाते हैं तो लोगों के लिए भी यह कारगर होती है। और मूलत: किसी त्रासदी या दुख को उपहार में बदलना (औरों के लिए और आखिर अपने लिए भी) हमारा मंत्र होना चाहिए जिससे कि इस दुनिया को सभी के रहने लायक बना सकें।''

मैक्डॉनल्ड ने स्पैन को बताया कि उनकी दूसरी किताब *ईस्टर राइजिंग* ''उस बार-बार पूछने वाले सवाल'' से जूझती है कि वह साउथी के हिंसा और गरीबी के जाल में फंसने से कैसे बचे। ''...मेरे लिए आखिर में मसला बाहर निकलने का नहीं था बल्कि उस सबको स्वीकार करने का था जहां से हम आते हैं और उससे सीखने का जिससे कि हम आगे बढ़ सकें। इसलिए बाहर निकलना, बड़ी दुनिया को देखना मेरे अपने ऊपर उठने की ओर पहला कदम था। लेकिन फिर लौटना (एक नए तरीके से, एक नई समझ के साथ कि इस अस्तव्यस्तता और दुखों से भरपूर दुनिया के बीच कैसे रहा जाए) भी उतना ही महत्वपूर्ण था... साउथी लौटना, अपने परिवार और समुदाय के बारे में हर चीज़ को स्वीकार करना (चाहे मैं भौगोलिक रूप से कहीं भी होऊं)।''

अजीत कुमार

अमेरिकी डिप्टी चीफ़ ऑफ़ मिशन स्टीवन जे. व्हाइट अपने आवास पर लेखकों के लिए आयोजित स्वागत समारोह में पत्रकार और एक्टिविस्ट रामी छाबड़ा के साथ।

पाकिस्तानी मूल के ब्रिटिश लेखक नदीम असलम के कथा साहित्य में सामाजिक तानाबाना हिंसा, युद्धों और धार्मिक कट्टरता का शिकार है। असलम ने अक्सर श्रीलंका में जन्मे और *द इंग्लिश पेशेंट* के कनाडाई लेखक माइकल ओंदात्जे की सार्वजनिक तौर पर प्रशंसा की है। जब उत्सव में मौजूद एक व्यक्ति ने उनसे उनके लेखन पर ओंदात्जे के प्रभाव के बारे में पूछा तो कोई भी उम्मीद कर सकता था कि वह शैली के बारे में बोलेंगे क्योंकि दोनों ही लेखक भरापूरा गद्य लिखते हैं। लेकिन असलम ने जवाब दिया कि ओंदात्जे ने उन्हें भौगोलिक रूप से आज़ाद कराया और पाकिस्तान और इंग्लैंड के उनके अनुभवों से परे अपने लेखन में पूरी दुनिया को तलाशने को प्रेरित किया।

यात्रा लेखन के एक सत्र में कार्यक्रम का समन्वय कर रहे विलियम डेलरिंपल ने विक्रम सेठ से पूछा कि यात्रा लेखक पाठक को वह क्या चीज़ देता है जो एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका नहीं देता। विक्रम सेठ को लोग यात्रा लेखक के बजाय उपन्यासकार और कवि के तौर पर ज़्यादा जानते हैं। सेठ ने कहा कि तिब्बत की यात्रा के अनुभवों पर मूलत: उनका इरादा पुस्तक लिखने का नहीं था लेकिन लोग उनसे इस यात्रा के बारे में पूछते थे। जब उन्होंने इस यात्रा के बारे में कुछ पृष्ठ लिखे तो उनके पिता ने प्रकाशक तलाशने के लिए प्रेरित किया। इसी का परिणाम रही *हेवन लेक: ट्रेवल्स थ्रू सिन्कियांग एंड तिब्बत*। इसमें सिर्फ यात्रा के बारे में नहीं बताया गया है, बल्कि यह व्यक्तित्वों और मुलाकातों, लोगों के साथ ही स्थानों पर भी केंद्रित है। कोलकाता में जन्मे और अमेरिका तथा इंग्लैंड और चीन में पढ़े सेठ यात्राएं करते रहते हैं। उनके लेखन में कई देशों में रहने का उनका अनुभव झलकता है। कैलिफ़ोर्निया की स्टैनफ़र्ड यूनिवर्सिटी में बिताए सालों के दौरान उन्होंने अर्थशास्त्र, कविता और मंदारिन की पढ़ाई की और फिर वहीं लौटकर लेखन पढ़ाने का काम शुरू किया। वह बहुभाषी हैं लेकिन कहते हैं कि अंग्रेजी ही वह माध्यम है जिसके जरिये वही अपनी कला को संप्रेषित कर पाते हैं।

अय्यर ने यात्रा लेखन को छिपे रूप में आत्मकथा बताया है, एक पड़ताल, एक संवाद, खुद का एक पोर्ट्रेट। ''किसी स्थान के माध्यम से वें चीज़ें करना जो आप घर पर नहीं कर सकते।'' वह कहते हैं कि सभी यात्रा लेखक ''अवकाश पर गए कथा साहित्य लेखक होते हैं।''

इन घोस्ट ट्रेन टू ईस्टर्न स्टार: ऑन द ट्रैक ऑफ़ द ग्रेट रेलवे बाज़ार में अमेरिकी यात्रा लेखक पॉल थोरो ने गंभीर पाठकों के अपने जैसे लोगों से मुलाकात के अनुभवों का वर्णन किया है। जयपुर साहित्य उत्सव के मूल तत्व को बताने वाली अपनी टिप्पणी में वह कहते हैं, ''मैं सोचता हूं कि गंभीर पाठक एक जैसे होते हैं। शब्दों के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा होती है लेकिन दिमाग शांत होता है। ये लोग जब दूसरे पाठकों से मिलते हैं तो बहुत बातचीत करने वाले और जीवंत होते हैं।'' मैक्डॉनल्ड के अनुसार भारत में लोगों से उनके संपर्क के दौरान उन्होंने अनुभव किया कि अमेरिका में दक्षिणी बोस्टन से लेकर मेसाच्यूसेट्स तक और न्यू यॉर्क में दक्षिण ब्रॉंक्स तक एक ही सार्वभौम भाषा होने के बारे में जानकारी एक चीज़ है तो, ''ग्लोब के दूसरी ओर भारत में यह जानना दूसरी चीज़ है कि हम सार्वभौमिक तत्वों से तादाम्य के साथ के साथ समझ और सह अनुभूति के साथ कहानियां सुन और सुना सकते हैं।''

*नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास में सूचना संसाधन अधिकारी के तौर पर **स्टीवन पी. क्रशहॉफ़** भारत, बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका में अमेरिकन लाइब्रेरी का प्रबंधन करते हैं। इस लेख में **दीपांजली काकाती** ने भी योगदान किया है।*

राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह

- अमेरिका के पुस्तकालयों का उत्सव
- पुस्तकालयों के इस्तेमाल को बढ़ावा
- 1958 से शुरू
- इस साल 12 से 18 अप्रैल तक
- थीम: पुस्तकालय से दुनिया से नाता
- प्रायोजन: अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन

ज़्यादा जानकारी के लिए:

राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह

http://www.ala.org/ala/aboutala/offices/pio/natlibraryweek/nlw.cfm

भारत में अमेरिकन लाइब्रेरी

http://americanlibrary.in.library.net/
http://newdelhi.usembassy.gov/americanlibrary.html